

ASIAN ARCHIVES

1.171

PAIPAL NO. 10

न. श्री ३०२

[illegible]

कावासिकल्याय तथागतायायाहनसम्यक्त्वदाया॥ नभारुगवतत
 मप्रतिहायवदधीयतथागतायाहनसम्यक्त्वदाया॥ नभारुगवततम
 विमितप्रतिहायवदसकिध्वदाय तथागतायाहनसम्यक्त्वदाया॥
 नभारुगवतसहप्रनमद्यगकीनप्रतिहायवदधीनामतथागताय
 हतसम्यक्त्वदाया॥ नभारुगवतसम्यक्त्वदायाप्रतिहायवदधीना
 ४ तथागतायाहनसम्यक्त्वदाया॥ नभारुगवतवद्विविधतता
 धीतिहायवतथायाहनसम्यक्त्वदाया॥ नभारुगवत

नमस्तुभ्यं कथं काटि सुदानिगवद्वा सुभागताया रुतं सुप्रकवद्वाय
 ॥ तमा रुगवतं सुकनकगगननिनदिरुधीतजानि सा वायमथग
 ताया रुसं स्य कवद्वाय ॥ नमस्तुगवतं सर्वधर्मताविद्वत्तथीगजा
 राजाय निरुसाय तथगताया रुतं सुप्रकवद्वाय ॥ १० ॥ मया देवानि वि
 द्वानि रुगवतां प्रमुखान् देवा ॥ नमस्तु त्वामावरुयन् नमस्तु वद्वाय ॥ न
 मस्तु वद्वाय ॥ नमस्तु कानि सस्य कवद्वा कटिनी ॥ नमस्तु वद्वाय प्रमुखान्
 ॥ ११ ॥ विमलानां महामलानां ॥ संप्रवक्तव्यानां ॥ नमस्तु ताकज्जलानां

२

नमस्तु तमायनानां ॥ नमस्तु कदापि नित ॥ नमस्तु ताकसभागतानां
 ॥ नमस्तु सस्य कनियनानां ॥ नमस्तु ददसीति सायान् गुरुसमथः
 नां ॥ नमस्तु सिद्धिविद्याधनानां ॥ नमस्तु दववुक्ताया ॥ नमस्तु वद्वाय ॥ न
 मस्तु गवतं वद्वाय ॥ नमस्तु मायति सहिताया ॥ नमस्तु रुगवतं नावायन
 या ॥ यं वमहावलमूदानमस्तु ताया ॥ नमस्तु रुगवतं महाकाजाया ॥ वि
 द्वन्तगवति विद्याय कवाया ॥ अग्निमुक्तिं भग्नान् ॥ वासिनाया ॥ साह
 गलनमस्तु ताया ॥ नमस्तु रुगवतं तथागतकलसा ॥ नमस्तु रुगवतं यद

कलस्या॥ नमरुगवर्तवका कलस्या॥ नमरुगवर्तवका कलस्या॥ नमरुग
वर्तमसिकलस्या॥ नमरुगवर्तनाक कलस्या॥ नमरुगवर्तकुमालकल
स्या॥ नमरुगवर्तदृष्टमयसिन॥ नमरुगवर्तनाका यतथागताया हंतस
म्यकवद्वया॥ नमरुगवर्तमसिता हायतथागताया हंतसम्यक
वद्वया॥ नमरुगवर्तमक्राया यतथागताया हंतसम्यकवद्वया॥ न
मरुगवर्तरेषअगुर्वेदयप्रनाका यतथागताया हंतसम्यक
वद्वया॥ नमरुगवर्तवृष्टितस॥ लेद्वनाका यतथागताया हंतस

मयस्कवद्वया॥ नमो रुगवतं प्रह्वकं रुद्राजाय तथ गताया हतं सम्यक्वद्वया॥
वद्वया॥ नमो रुगवतं समत रुद्रा यतथ गताया हतं सम्यक्वद्वया॥ न
मो रुगवतं वेवाच नायतथ गताया हतं सम्यक्वद्वया॥ नमो रुगवतं
विकसित नयना न्यल ४ गन्धकं रुद्राजाय तथ गताया हतं सम्यक्वद्वया
या॥ नमो रुगवतं भक्त मून्ययतथ गताया हतं सम्यक्वद्वया॥ प्रह्व
नमस्कृत्वा ००० रुगवतं तथ गताया हतं सम्यक्वद्वया॥ सितात प्रज्ञाना मायया जिता
४ महाप्रह्वगिना सर्वकलीकलरुविग्रहविवादप्रसमनी सुव नूतवि

गुरु कल्पिनि विद्या बुद्धिनि ॥ सर्व काल मृत्पुमि तानि मि सर्व वं वन मा कृ
 । सर्व दृष्ट सत्त्व निवा नवी ॥ सर्व निगड रं ऊधी ॥ सर्व यज्ञ ना कृ स ग्रह धा वि
 र्ध स न क नी ॥ वरु ना सि मि नि गुरु न वि ध स न क नि ॥ अष्ट विंश ति ती
 न कृ प्रा र्ण प्र सा द न क नी ॥ अष्ट नाम हा ग्रहा ना वि ध स न क नी ॥ सर्व
 ण कृ नि वा न सी धा व दृ द न्न प्र नि वा न नी ॥ रु व पि स षा ष्ठ मि ड द काः
 र्ण न नी ॥ अ य ना जि ता म हा धा ना म हा व ता म हा धु म हा दी फा म
 हा न जा म हा ख ना ४ काला य धु न वा सी नी ॥ आर्य ता ना रु कृ रि वे व

५

द्या व द्र मा त ति वि क्र ता ॥ य द्वा द्वा द्र वि द्रा य मा ला वे वा य ना जि
 ता ॥ व द्र पु धी वि षा ला की ॥ अ ना वे द रु द्र जि ता ॥ सा म्य न्र या म हा ख ना
 म हा न जा काला वे वा य ना जि ता ॥ व रु र्ख ला वे व व द्र की मा ला कृ
 ल न नी ॥ व द्र रु स्ता व वि द्या का कृ न मा लि का कृ म्हा न ता वे व वे वा व
 न रु ला ष्ठी व वि क्र ता ॥ वि र्म रु मा ना व व द्र क न क य हा ला न ना व द्र
 पु धी व स्ता व क म ला की ग णी प्र हा धी व द्र ला व ना व द्र सूर्य प्र हा
 र्ण द्र त था व द्र व ना नी य ॥ ७० रु रु मू द्रा म् उ ग ण म म सर्व स लाना

यरुयातासूयतिरुयाम् ॥ वरुमगरुयाता ॥ दवग्रहात् ॥ अमृतप्रहात्
 नौगग्रहात् ॥ मन्त्रप्रहात् ॥ मन्त्रप्रहात् ॥ धर्मग्रहात् ॥ किंनरप्रहात्
 हात् ॥ मन्त्रप्रहात् ॥ यज्ञग्रहात् ॥ नाकप्रहात् ॥ रुद्रप्रहात् ॥ प्र
 तप्रहात् ॥ पिशाचप्रहात् ॥ किराशुप्रहात् ॥ पूतनप्रहात् ॥ कठपतन
 प्रहात् ॥ स्कन्धप्रहात् ॥ उन्मादनप्रहात् ॥ द्युयाप्रहात् ॥ अयह्यप्रहा
 त् ॥ डागानकप्रहात् ॥ गकिनीप्रहात् ॥ नवतिप्रहात् ॥ यामिकीप्रहात्
 ॥ सङ्कनिप्रहात् ॥ मारुतदीप्रहात् ॥ आलवनप्रहात् ॥ वसिनीप्रहात्

॥ डा ॥ आहविनीता नूविनाहलिनीता वसाहविनीता मीसाहलिनी
 मासदाहलिनीता मेकाहलिनीता किंविनाहलिनीता वल्ल्याह
 लिनीता माल्याहलिनीता ॥ गन्धाहलिनी ॥ यक्षाहलिनी ॥ रुद्रा
 हलिनी ॥ ध्रुवाहलिनी ॥ मरुताहलिनी ॥ आदूषाहलिनी ॥ द्यू
 जाहलिनी ॥ विष्ठाहलिनी ॥ मृगाहलिनी ॥ श्वगाहलिनी ॥ अ
 याहलिनी ॥ सिहानकाहलिनी ॥ वाताहलिनी ॥ अशुर्वाहलि
 नी ॥ रुद्रनिकाहलिनी ॥ ॥ प्रमथासर्वथासर्वग्रहाधिकनवि

आदिन्दयामिकीलयामिवकुक्षयनीतकुक्षयनीविद्यादिन्दयामि
कीलयामिवकुक्षयनी॥आकडाकिनीकुक्षयनीविद्यादिन्दयामिकील
यामिवकुक्षयनी॥बुद्धकुक्षयनीविद्यादिन्दयामिकीलयामिवकुक्षयनी॥
नामाशयकुक्षयनीविद्यादिन्दयामिकीलयामिवकुक्षयनी॥महाययय
तिनूदकुक्षयनीविद्यादिन्दयामिकीलयामिवकुक्षयनी॥महाकालकुक्षयनी
विद्यादिन्दयामिकीलयामिवकुक्षयनी॥कुमालेकुक्षयनीविद्यादिन्दयामि
किलयामिवकुक्षयनी॥माहगणकुक्षयनीविद्यादिन्दयामिकीलया

१

करव

मिवकुक्षयनी॥कपालेकुक्षयनीविद्यादिन्दयामिकीलयामिवकुक्षयनी॥बुद्ध
रुमिलिकुक्षयनीविद्यादिन्दयामिकीलयामिवकुक्षयनी॥तत्त्वगनूकुक्षयनी
विद्यादिन्दयामिकीलयामिवकुक्षयनी॥अयकनमधकनासर्वार्थसाध
नकुक्षयनीविद्यादिन्दयामिकीलयामिवकुक्षयनी॥रुमिलिकुक्षयनीविद्यादिन्दयामि
कुक्षयनीविद्यादिन्दयामिकीलयामिवकुक्षयनी॥अयकनमधकनासर्वार्थसाध
नकुक्षयनीविद्यादिन्दयामिकीलयामिवकुक्षयनी॥रुमिलिकुक्षयनीविद्यादिन्दयामि
कुक्षयनीविद्यादिन्दयामिकीलयामिवकुक्षयनी॥अयकनमधकनासर्वार्थसाध
नकुक्षयनीविद्यादिन्दयामिकीलयामिवकुक्षयनी॥रुमिलिकुक्षयनीविद्यादिन्दयामि

मिदं कृष्णालाकं च न स यन्निवात्र कृता विद्या विन्दया मिक्लिया मि वड
 णा॥ वडो धलवक्रया ण न कृता विद्या विन्दया मिक्लिया मि वडो ण
 ॥ दृगदृती च तथ नी कृता विद्या विन्दया मिक्लिया मि वडो ण ॥ स
 ण न वा मिनी कृता विद्या विन्दया मिक्लिया मि वडो ण ॥ अग्निक
 र्मा कृता विद्या विन्दया मिक्लिया मि वडो ण ॥ सर्वद्विगल कृता
 विद्या विन्दया मिक्लिया मि वडो ण ॥ सर्वदव नदी कृता विद्या वि
 न्दया मिक्लिया मि वडो ण ॥ वक्रया कृता विद्या विन्दया मि

किल यामि वडो ण ॥ सर्वप्रत्ययिक ४ प्रत्ययिणा हि ते लिखितं कृता विद्या विन्द
 यामि किल यामि वडो ण ॥ मम सर्वसत्त्वानां श्रुतं २ स्वाहा ॥ रुगवतं थ
 गता श्री यसि तात वरुण महा प्रहृणि ३ न मा मुक्त ॥ अहिता न लार्क य
 रू लिखितं विकसितं ४ सिता न युतं ५ द्रव २ प्रहृल २ धक २ दन २ विद
 २ विन्द ॥ रिद २ दै २ रू २ रू २ स्वाहा ॥ रुदय ॥ रु २ रू २ ॥ रु २ रू २ ॥ अ
 भावा यरू २ ॥ अयति रुता यरू २ ॥ वनद रु २ ॥ वनदा यरू २ ॥ अमृ
 विद्रा यन कवा यरू २ ॥ य न मनु विद्रा यन कवा यरू २ ॥ सर्वदव रु

[illegible][illegible]

सहादना ॥ अथाहना ॥ असथाहना ॥ अथनिकाहना ॥ अथवग्रहा
 नागग्रहा ॥ असनग्रहा ॥ सनग्रहा ॥ गभर्गग्रहा ॥ किन्नरग्रहा ॥
 महात्मग्रहा ॥ अरुग्रहा ॥ नाकग्रहा ॥ हतग्रहा ॥ धृतग्रहा ॥
 पिशाङ्गग्रहा ॥ ऊहाग्रहा ॥ सुतनग्रहा ॥ कटपूतनग्रहा ॥ स्केय
 ग्रहा ॥ उमादग्रहा ॥ कथाग्रहा ॥ अपस्यालयग्रहा ॥ उस्तलक
 ग्रहा ॥ अकिनिग्रहा ॥ नेवतिग्रहा ॥ यानकिग्रहा ॥ अकिनियग्र
 हा ॥ माहंनदिग्रहा ॥ अलवनग्रहा ॥ कटवासिनिग्रहा ॥ मम

११

सर्वसत्त्वानां शुभकां कुर्वतु वर्षसंयम्य सुप्रदातारं ॥ अनायका द्वेष्टीका
 ॥ उष्टीका ॥ अर्थीका ॥ सफाहि ॥ अइमासिका ॥ मासिका ॥ अइदेव
 सिका ॥ मद्रुफिका ॥ निरुद्धा ॥ विषमद्रुद्धा ॥ रुतद्रुद्धा ॥ वारिक
 द्रुद्धा ॥ देतिकद्रुद्धा ॥ अथाकेद्रुद्धा ॥ सतिपातकेद्रुद्धा ॥ सर्वद्रुद्धा ॥
 ॥ सिन्नाहि ॥ अशुविहदकं अनायकं ॥ अकिनागी ॥ मयनागी ॥ कष्टना
 गी ॥ रुदयनागी ॥ गलनागी ॥ कष्टुगूल ॥ दत्तगूल ॥ रुदगूल ॥ मन्म
 ल ॥ यार्गगूल ॥ उदलगूल ॥ कटिगूल ॥ वस्तिगूल ॥ डनगूल ॥ ऊवागूल

लो॥ दक्षगुला॥ पादगुला॥ अंगप्रत्यंगगुला॥ सर्वगुला॥ वायनयादि॥ हत य
 न जाकिनिहल॥ दक्षकेपुकिटिरुक्कपिठकलुगायातावेमव्यालाद
 लिगं ॥ ४५ ॥ घस्वासुवासगनविषं धामगुप्तिनूदकसावमालिवेनकाका
 न भुकातमस्य जी कर्क भेलाटकं वृष्टिकं सूर्यसंकलमकिंकसिह
 यायुवृष्टिकं नृकुवासकं न यकचिकीविनायहलिर्षा॥ ४६ ॥ यमसिर्व
 यसिर्वगुरुधसिपनयं उरुगवतसितातपुमहाश्रीषयुहनिनवि
 यावाकानूरावनः॥ यावद्वासादथाकतात्यतप्रविद्यावर्धकलामितं

१२

जावयकवासि॥ नृयनविद्यावभक्तवासि॥ लामवयकवासि॥ एवसेन
 यस्तुमृतकवासि॥ तद्यथा॥ पुंमनत्र २ खसतश्रीव २ सोम २ मन्त्र
 २ विषद २ वे २ नृद्विवजयवसाने॥ व २ वजयासीरुट्॥ पुं दै २ व २
 दै २ रूट् स्वाहा॥ ॥ य २ मां तथगतान्नीषसितातयधुनामायजिता
 प्रत्यगिनिविद्यावाझिलिखितानुऊयधुवावधुवा वल्लुलवाकाय
 तर्तवा क ॥ ५० ॥ तर्तवा कलानृद्वेनविशति २ वावयिष्यन्ती॥ तस्यय
 वजीवविस्तनकुमिष्यन्ति॥ सुरुनकुमिष्यन्ति॥ नपिनकुमिष्यन्ती

॥ नादकंतकालकलिषात्किं ॥ गवन्नकुमिषात्किं ॥ यायनकुमिषात्किं ॥
 सर्वसुकर्मसु कुमिषात्किं ॥ नाकासु सुखनाका लंकविषात्किं ॥ सर्व
 पदानां सर्वविषु विनायकानां विषया रुवी विषात्किं ॥ सतायधुना
 सिक्किमहाकलसु सुखा विजाति सुखा रुवति ॥ सुखनालीति वदन्
 लकाटि नियुतगता सुखा सि विद्यादवता तस्य सत रं मम सर्वस
 न्यानी वन रुवि वन गुफिक विषात्किं ॥ सुखवि वदन् नीकि कन
 गलाति सुपाल विषात्किं ॥ नकथाय कलानयुत नन ॥ नकटपूत

73

नन्व ॥ नपुनन्व ॥ नपिमा वन्व ॥ नमनूषादा विदन् ॥ नपुनन्व नवा सि रु वि
 विषात्किं ॥ गंगा नदिवा लुका समाना मपु मया सुखाय विदन् नरु गव तां
 यथ सुखं धनसमन्ता गकारु विषात्किं ॥ सर्वचक्रवर्ज रुगवन्ता मन्व ॥ एक
 लसमयनका वन गुफिक नी विषात्किं ॥ तया मपि व विषा रु विषात्किं ॥
 सताय व यष्टु मां गथा श्री सति ता न व रुना मा पना कि ता मरु
 प्रत्यगिना विद्या ना ह्या धन यसा न ॥ नृपुनन्व विरु विषात्किं ॥ नृमो
 निमो निरु विषात्किं ॥ नृगुविगु वी रु विषात्किं ॥ नृनाय वा सिद्ध य वा

सिरुविद्युक्तिः॥ याधियवान्ननश्चिकानीविद्युत्तयापारुविद्युक्तिः॥ सर्वकमा
 वन्नानिनिन्नवसमयविक्रयंगवृत्तिः॥ यः कश्चित्कृत्यपूजावाकलद
 हितावासाहप्रमयपूजायाः॥ ॐ मां तथा गताप्रायसि तातयतानामयवा
 जितायहनिवाविद्यानास्तीक्ष्णप्रयमानः॥ यः प्राथियुक्तप्रकिल्लतः॥ ॐ
 यः यथावत्तवप्रकिल्लतः॥ ॐ तच्चत्वासुखावत्यालोककुरुउद्यः
 यद्यने॥ यः कश्चित्मनूयामासे॥ ॐ मालसमालसर्व॥ ॐ ह्यपदवायस
 त्तपायासोयन्नवकागमनयुवकस्यरुगवत्तथागताप्रीयसितात

यद्यनिमायवाजियहनिवाविद्यानास्तीक्ष्णजापवनाययिन्नामहतास
 कालेनमहतीयजाकृत्वासर्वनगनदानयप्रवर्गधत्॥ ॐ मन्तवानि
 गमवा ऊनयदवविर्हवावागुरुवा मूत्रधायतमवा॥ सुदप्रवर्गीत
 मावृत्तद॥ ॐ ॥ किं कृताहविद्युक्तिः॥ सर्व॥ ॐ ह्यपदवायस॥ ॐ याः
 यासायन्नवकाहीवयसमयीयुक्तिः॥ यस्मिन्विद्ययः॥ ॐ तथागता
 श्रीयसितातपुजानामायवाजितायहनिवामहाविद्यानास्तीक्ष्णवनी
 युक्तिः॥ ॐ नययुक्ती॥ दावयि युक्तिः॥ महा॥ ॐ नवगतस्मिन्विद्ययः

कालेन कालेन दवावर्ष भवा मोक्ष कमाय स्यात् ॥ नागनाडाग स्यात्
 लेन कालेन दवावर्ष भवा मोक्ष कमाय स्यात् ॥ कालेन कालेन दवावर्ष भवा मोक्ष कमाय स्यात् ॥
 लस स्यात् ॥ रु वि स्यात् ॥ का कालेन कालेन मोक्ष कमाय स्यात् ॥
 ति ॥ तथैव ॥ अनागनागनाडा ॥ वासुकिनागनाडा ॥ तक्रकतीर्ष
 नाडा ॥ कर्कटकनागनाडा ॥ मदनागनाडा ॥ महायधनागनाडा ॥
 ना ॥ शिखिनागनाडा ॥ कलिका नागनाडा ॥ अनामनागनाडा ॥
 ॥ अवसनागनाडा ॥ कालेन कालेन दवावर्ष भवा मोक्ष कमाय स्यात्

१७

॥ कालेन कालेन दवावर्ष भवा मोक्ष कमाय स्यात् ॥ वधूनि कमाय स्यात् ॥ पुत्रपुत्रा नाडा वासि
 ता तय ग्रामुद्रा मध्वावर्ष भवा मोक्ष कमाय स्यात् ॥ तमा नक्षत्रा य ॥ तथैव ॥
 सुं सुं मले २ न गाय स्यात् ॥ अस्या अस्थि मय मय वा ॥ मनुष्यामा
 ले ॥ गामा नय पुमान् वा विविक्ता मदि सिखित्वा क ॥ वधितया ॥
 र्षा सर्वसिद्धि ॥ सर्वना ॥ गाय दवा ॥ वधितया स्यात् ॥ सुं सुं सुं सुं
 मम सर्वस्य ना विनका कु न स्यात् ॥ सुं वदना लिदै ॥ सुं सुं सुं सुं
 ॥ गता श्री व अवला किन मृषित का वासि ॥ सुं सुं सुं सुं सुं सुं सुं सुं

[illegible]

ASHA ANCHIVES

1417

1417

14